अखरावती

कबीर साहेब का पूरा ग्रन्थ

जो

लाला गिरधारी लाल साहेब के २६ चौपाई
वाले पहिले छापे मैं १७ चौपाई और एक
हस्त लिखित प्रमाणिक
लेख से

[जिसे कृपा करके नदियाद के एक कबीर पंथी भक्त वैद्यराज
नारायन भाई पंड्या ने भेजा] यथा स्थान जोड़ कर
व शोध कर छापी गई।

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

१६२६

दूसरा एडिशन] [दाम =)

Printed at the Belvedere Steam Printing Works, Allahabad, by E. Hall.

संतबानी

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उनमें से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैं। कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है, और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फ़ुट नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है, उनका जीवन चरित्र भी साथ ही छापा गया है, और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से फ़ुट नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् "संतबानी संग्रह" भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी वैकुंठवासी ने गदगद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के बचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१९ में छपी है, जिसके विषय में श्रीमान महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"यह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है, जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपी हैं जिन में प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई हैं। उनके नाम और दाम सूची से जो कि इस पुस्तक के पीछे है देखिये।

हमने 'मनोरमा' नामक सचित्र मासिक पत्रिका भी निकालना आरम्भ कर दिया है। साहित्य सेवा के साथ ही साथ मनोरञ्जक लेख कहानियाँ और ऐसे महात्माओं के कवित्त दोहे सवैये जो स्फुट हैं और पुस्तक के रूप में नहीं निकाली जा सकतीं निरंतर छपती हैं। वार्षिक मूल्य ५) और छः माही ३) है।

मनेजर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

फ़रवरी सन् १९२९ ई०

इलाहाबाद।

॥ अखरावती ॥

(कबीर साहेब)

॥ दोहा ॥

सतगुरु की परितीत, सत्तनाम निज सार है ।
सोई मुक्ति सँदेस, सुनो साध सत भाव से ॥

॥ सोरठा ॥

नाम सनेही होय, काग कुमति मति परिहरै ।
कलह करम सब खोय, हंस होय सतगुरु मिलै ॥

॥ चौपाई १ ॥

सत्तलोक की अकह कहानी । सोइ निज सतगुरु की सहदानी ॥
रूपबरन जहं वहं नहिं देसा । तीन लोक अचरज सा देखा ॥
नहिं वहं पांच तत्त की काया । सत्त पुरुष आपहि निर्माया ॥
नहिं परकिर्ति पचीसो होई । जरा मरन जाने नहिं कोई ॥
दस इंद्री नाहीं षट कर्म्मा । बरन भेद नाहीं कुल धर्म्मा ॥
दिवस न रैन चंद्र नहिं सूरा । बिमल प्रकास सकल बिधि पूरा
स्वर्ग नर्क गुन तीन न होई । सब्द सरूप सकल है सोई ॥

॥ दोहा ॥

सब्द सरूप सतगुरु अहैं, जाका आदि न अंत ।
काया माहीं अग्र हैं, निहचे मानो संत ॥

॥ सोरठा ॥

सत्त सब्द परमान, अनहद बान जो ढूंढ़े ।
और झूठ सब ज्ञान, कहैं कबीर बिचारि के ॥

॥ चौपाई २ ॥

सुनहु संदेसा सुरत सनेही । कहूं संदेसा अचल बिदेही ॥
जुग अनंत हम आन पुकारा । कोई न माना बचन हमारा ॥

सतजुग त्रेता द्वापर बीता । काहु न हुई सब्द परतीता ॥
जप तप जोग सबन ठहराया । काहू न खोज सब्द का पाया
कलजुग एको थिति ना होई । बिन सतनाम तरै नहिं कोई ॥
जोनी संकट कबहुं न छूटै । पकरि पकरि जम सबहिन लूटै
तीरथ बरत नेम जग लागा । काहू के मम धोख न भागा ॥

॥ दोहा ॥

धोखे सब जग पचि मुआ, नहिं पाया थिति ज्ञान ।
सतगुरु सब्द पुकारही, बहिरा सुनै न कान ॥

॥ सोरठा ॥

बिन सतगुरु उपदेस, सुर नर मुनि नहिं निस्तरे ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस, और सबन की कौन गति ॥

॥ चौपाई ३ ॥

भरमि भरमि मूआ संसारा । बिरले काहू तंतु बिचारा ॥
या जग में बहु गुरुवा भयेऊ । स्वर्ग आसा नरकहि गयेऊ ॥
सबै सियान कृतिम मन दीन्हा । औगुन ते नहिं साहेब चीन्हा
जो कहते जिव भौजल पारा । एको जिव उन नाहिं उबारा ॥
बूड़ि मरे ते भौजल माहीं । आतम ज्ञान बिचारे नाहीं ॥
राम कहत मूआ संसारा । आतमराम न काहू बिचारा ॥
बूझै सो जे त्रिभुवन सूझै । गहिरी बानी बिरला बूझै ॥

॥ दोहा ॥

कोटिक पढ गुन पचि मुआ, कहै कबीर समझाय ॥
बिन सगगुरु पावै नहीं, कोटिक करै उपाय ॥

॥ सोरठा ॥

कर भक्ति छाड़ि कुल लाज, जो सतगुर उपदेस दिय ॥
होय जीव को काज, निहचे कर परतीत कर ॥

॥ चौपाई ४ ॥

बहुत गिरंथ कथा पदसाखी । जीवनकाजअखरावति भाखी॥
अगमनिगमदोउसब्दसमोधा। एक सब्द तें जीव प्रबोधा ॥
सब्द रूप होय सब्द सनेही । सत्तनाम की महिमा येही ॥
बिन सतनाम न संसै जाई । संसै मिटै बिन नाहिं समाई ॥
सबजग तजि जोहोयनियारा। सोई पावै सब्द हमारा ॥
सब्द गहै तज जगकी आसा । निहचै कै मानो धर्मदासा ॥
निजपुर जायबहुरिनहिंआवै । मन बच कर्म जो नामधियावै॥

॥ दोहा ॥

अछै बृछ की छांह में, जो सतनाम समाय ।
सत्त सब्द परमान है, सत्तलोक को जाय ॥

॥ सोरठा ॥

कहैं हंसपति सोइ, हंसराज धर्मदास सुन ।
जीव काज जेहि होइ, सोई देहुं सिखापना ॥

॥ चौपाई ५ ॥

काया तें आगे जो होई । ता में राखो सुरति समोई ॥
मूलअछरकानामजो अहई । ता को बूझै जग नाहिंबहई ॥
सब्दलागि जोमूल हैगहिया। मूलहि तें पावै निरभैया ॥
अच्छर सांचझूठ सब ज्ञाना । सोई अच्छर मूल बखाना ॥
सतगुरु दया तेंअच्छर पाई । अच्छर तें हंसा घर जाई ॥
अच्छर मूल सुबन को होई । बिनअच्छरसब जायबिगोई ॥
आदिअंतजिनअच्छरचीन्हा। तिनसतलोकपयानाकीन्हा ॥

॥ दोह ॥

आदि अछर ही अगम है, ता को सब बिस्तार ।
सतगुरु दया तें पाइये, सत्तनाम निज सार ॥

॥ सोरठा ॥

करै बिचार विबेक, कहूं जीव निस्तार जेहि ॥
सरानम को टेक, और सकल धन धाम है ॥

॥ चौपाई ६ ॥

षटकर्मतजुहे जीव अजानी । सुनो शब्द सतगुरुमुखबानी ॥
अजपा जाप जपोमन लाई । जाके जपे मिटे दुमिताई ॥
सब्द सार चीन्हो नर लोई । सब घट ब्याप रहाहै सोई ॥
चीन्हे ताहि जीव निस्तरि है । बिन रसनासो सब्दउचरिहै ॥
है जोगीजोगीहोइ अइया ।(सो)मरैनाहिं जो तन मनबहिया॥
मन्सापवनजोनिसदिनध्याना। बानी केवल चित बिसराना ॥
धन सेवक जो अवसर पड़े । ठाकुर हो के सेवा करे ॥

॥ दोहा ॥

तिमिर मलिन तैं ना टरे,(जौ लौं) सूर उदय नहिं होय ।
सत्त सब्द जो जानई, करम भरम सब खोय ॥

॥ सोरठा ॥

काहु को करै समीप, करम वृच्छ सत भाव है ॥
गहै सब्द निज दीप, जोग ठीक भेदा मिलै ॥

॥ चौपाई ७ ॥

गुरु गम गहै ज्ञान जोपावै । आवागमनकी सुधि बिसरावै॥
ज्ञान होय जो सतगुरु भेटैं। सतगुरु मिलै तो संसा मेटैं ॥
गुरुप्रताप ते सब कुछ बूझै। गुरुकीदया तें त्रिभुवन सूझै॥
षट दरसन जो गये भुलाई। बिन गुरु घाट न काहू पाई ॥
सतगुरु मिलै तो घाट बतावैं। औघट तें घाटे ले आवैं ॥
देही का गुरु सबहिन कीन्हा। सतगुरु रूप न काहू चीन्हा ॥
करम हेता देही गुरु करई । मन का धोख न उनसे टरई॥

॥ दोहा ॥

तन की आस सब छूटई, मन का करै बिचार ।
मन चीन्हे बिन थित नहीं, सतगुरु कहैं पुकार ॥

॥ सोरठा ॥

सतगुरु खोजो संत, जीव काज जेहि होय जो ।
मेटैं भव का अंत, आवागवन निवारहीं ॥

॥ चौपाई ८ ॥

घट परमान है सबके माहीं । है घट में घट की सुधि नाहीं॥
निकट रहै नहिं करै बिचारा । मृग कस्तूरी ढूंढै बन झाड़ा ॥
जनम अनेकन गये निरासी । थित पावै नहिं मिटै चौरासी ॥
किरतम को सबहिन सत माना । सत्त सब्द का मरम न जाना॥
जब लग सार सब्द नहिं बुझई । चौरासी कैसे के तजई ॥
सतगुरु मिलैं तो संसा जाई । बिन सतगुरु नहिं करम नसाई॥
काल फांस सत सब्द से कटई । निस बासर जो नामै रटई ॥

॥ दोहा ॥

जंत्र मंत्र सब झूठ है, मत भरमो जग कोय ।
सत्त सब्द जाने बिना, कौवा हंस न होय ॥

॥ सोरठा ॥

पतिबर्ता नहिं सोय, जो पति तजि औरहि रतै ॥
वाका नीक न होय, दूजा पति जो पै लखै ॥

॥ चौपाई ९ ॥

निहचे करजो सतगुरु भाखा । मूलहि गहे तेजि सब साखा ॥
नाम गहै तज जग की आसा । नाम बिना जग गया निरासा ॥
देह धरे का सुख है येही । सतगुरु मिलि होइ नाम सनेही॥

करम भरम तजि कुल से टूटै । चौरासी का बन्धन छूटै ॥
नामबिना नरसबकोइ पचिया। कालकेमुखसे कोइनहिं बचिया
नाम समान न जग कछु होई । सब्द में ब्याप रहा है सोई ॥
नाम सनेही जग से न्यारा । जसजलमाहिं कंवलनिरधारा ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु का उपदेस है, जो सतनाम समाय ।
सत्त सब्द छूटै नहीं, निहचे निज घर जाय ॥

॥ सोरठा ॥

बिनवों दोउ कर जोर, साहेब बंदीछोर को ।
पावों नाम की डोर, जरा मरन भव का मिटै ॥

॥ चौपाई १० ॥

सतगुरु सब्द खेल चौगाना । यह ना गोय रहै मैदाना ॥
सुरत निरत दोउ हाल बनाई। तेहि का गोय गगन पहुंचाई ॥
चीन्है सब्द सब्द सब जानै । दूजा भाव न मन में आनै ।
सुधा सहित जो अनहद राता । और सभी झूठी है बाता ॥
नाम भेद संसा मिटि जाई । अनुभव पद में जाय समाई ॥
परखै सब्द बिबेकी होई । सब्द बिना जग जाय बिगोई ॥
बिना सब्द मुक्ती नहिं पावे । ज्ञानी होय सो यह अर्थावे ॥

॥ दोहा ॥

पंडित पढ़ गुन पचि मुए, बिन गुरु मिलै न ज्ञान ।
बिना सब्द नहिं मुक्ति है, सत्त सब्द परमान ॥

॥ सोरठा ॥

ज्ञानी सुनहु संदेस, तीन लोक के बाहरे ।
तहां मुक्ति परवेस, सब्द बिबेकी परखिहै ॥

॥ चौपाई ११ ॥

अच्छर निःअच्छर सतनामा । अच्छर सांच झूठ सब जाना ॥

पंडित होइ अच्छर नहिं चीन्हा। सो पंडित है काल अधीना॥
पंडित सो निज अच्छर चीन्हा। अच्छर सभी घाट परवीना॥
अच्छर मूल और सब जाई। बिन अच्छर नहिं मन पतियाई
इक अच्छर का नाम जो पावै। जोनी संकट बहुरि न आवै॥
अच्छर होय जो अच्छर जानै। अछै लोक का भेद बखानै॥
अछै बृच्छ अच्छर तें पावै। सब्द डोर हंसा चढ़ि आवै॥

॥ दोहा ॥

अछै होय अच्छर गहै, अच्छर ही उपदेस।
अछर डोर चढ़ जाय जिव, अच्छर जाके देस॥

॥ सोरठा ॥

अच्छर ही परमान, सतगुरु कहैं पुकार के।
पावै मुक्ति कर दान, सत्त बचन परमान है॥

॥ चौपाई १२ ॥

जीव काज होवै सोइ लागी। सोई करो कुल लज्जा त्यागी॥
सुर नर मुनि गन सब पचि हारे। काहू शब्द भेद न बिचारे॥
ये संसय संसारहि पड़िया। तब सब जीवन को सुत कहिया॥
कौन होय तो भेद बतावै। कहैं सतगुर जो नाम सुनावै॥
हंस होय तो निज घर जाई। चौरासी नाहीं भरमाई॥
तब सतगुरु मिलि कीन्ह बिचारा। जीव काज लख ज्ञान पुकारा
सत्त नाम या का परमाना। जो पावै सो देय पयाना।

॥ दोहा ॥

सत्त सब्द निज जानि के, जिनके मन परतीत।
काग कुमति तजि है सभी, चलै सो भव जल जीत॥

॥ सोरठा ॥

क्यों छूटै जम जाल, पाँव बंध जो बंधिया।
काटैं दीनदयाल, करम फंद इक नाम तें॥

॥ चौपाई १३ ॥

झनकारै अनहद है जहवां । सुरति सनेही पहुंचे तहवां ॥
और और कछु सुनै न भाखै । उनमुनि सदै अमीरस चाखै ॥
मन थिर होय न एकौ बाता । तौ पतियाय जो अनहदराता ॥
जहँ लग जग में बाजे होई । अनहद माहिं सुने सब कोई ॥
सुरति से देखे निरत अखाड़ा । सतगुरु मता यही है सारा ॥
वाही घर जो सुरत लगावै । सोघर सतगुरु अजर दिखावै ॥
ज्ञानी होय कोइ सुरति सनेही । भेद बखानै अवचल देही ॥

॥ दोहा ॥

बंधन तें न्यारा रहै, बिरला पावै भेद ।
काहे को जप तप करै, पढ़ै सास्त्र और वेद ॥

॥ सोरठा ॥

मन तब गगन समाय, धुन सुन कर जो मगन होय ॥
नहिं आवै नहिं जाय, सुखी शब्द तिथि पावई ।

॥ चौपाई १४ ॥

जो कोई जग से न्यारा होई । सात दीप को जानै सोई ॥
रेचक पूरक कोइ कोइ जानै । कुंभक बिरला भेद बखानै ॥
इंगल पिंगल का करे बिबेका । सुखमन तत्त न काहू देखा ॥
मन पवनानिसिदिनभरमावा । बाहर भीतर तिथि नहिं पावा ॥
करम अनेक जोग जो करई । जुगत बिना नर नरकै परई ॥
सहज जोग जिन सब्दे पैया । सहजहि से मन गगन चढ़ैया ॥
सोजोगी जो मन को चीन्हा । मन चीन्हे बिन जोग अधीना ॥

॥ दोहा ॥

शब्द खोजि मन बस करे, सहज जोग है येह ॥
सत्तनाम निज सार है, नहिं तो झूटी देह ॥

॥ सोरठा ॥

सत माने नर सोय, सतगुरु जो दाया करैं।
और झूठ सब होय, काहे को भरमत फिरै ॥

॥ चौपाई १५ ॥

झूठा होइ कस नामहि लागी। मन बच कर्म होय बैरागी ॥
कुल छूटै तब सतगुरु भेटैं। जो उपजै सो संसा मेटैं ॥
नाव अहै पर खेवट नाहीं। भवजल जीव कहाँ होइ जाहीं॥
भवसागर बहु संकट होई। बिना राम डूबै सब कोई॥
सत्त नाम भवतारन येही। जेहि जानि जिव निर्भय रहही।
नाम अहै साथी कढ़िहारा। सतगुरु खेय लगावैं पारा ॥
नाम गहै जग जुगति बहावे। मिथ्या जग जो नामहि पावे ॥

॥ दोहा ॥

एक नाम जाने बिना, नहिं मिटै करम का अंक।
तबही से सब पाइये, जब होय जीव निसंक ॥

॥ सोरठा ॥

आपा डारै खोय, वह प्रानी रंगै मिलै।
तबही तें सुख होय, जाति बरन जाके नहीं।

॥ चोपाई १६ ॥

जो दृढ़ कै सत नामहि जानैं। सत गुरु बचन सत्त कर मानै॥
सतगुरु कहैं सोई यह करई। सतगुरु आज्ञा से निस्तरई ॥
सत्त बचन सतगुरु को भाखे। सतगुरु तें राखै अभिलाखे॥
निस बासर सतगुरु लौलावा। सतगुरु दया से नामहि पावा॥
जाको मिलै सब्द सहदानी। तिन सतगुरु की महिमा जानी॥
जाको सतगुरु की परतीती। निर्भय होय सो भवजल जीती॥
प्रेमहि से सतगुरु जिन पावा। भवजल में सतलोक दिखावा॥

॥ दोहा ॥

मूल ध्यान गुरु रूप है, मूल पूजा गुरु पांव ।
मूल नाम गुरु बचन है, सत्त मूल सत भाव ॥

॥ सोरठा ॥

निर्गुन निस दिन गाव, रटै दास जिव जाहि को ।
गुरु विद्या बतलाव, गोबिन्द गुरु बिन ना मिलै॥

॥ चौपाई १७ ॥

जेहि डारो घर में बैठाई । तेहि पर बैठि जुगन जुगभाई ॥
तेहि डर तीनोँ लोक डेराई । जरा मरन चौरासी भाई ॥
पंडित पढ़ि पढ़ि बेद बखानो। गुन तीनोँ की अस्तुत जानी ॥
वही चाल संसार चलावैं । करम भरम भवफंद दृढ़ावै ॥
सरगुन में संसार भुलाना । निर्गुन का कोई भेद न जाना ॥
अर्थ बिचारे पढ़ि पढ़ि गीता। भई नहीं सतगुरु परतीता ॥
देह धरी सतनाम न गाया। कैसे तेहि छाड़ै जमराया ॥

॥ दोहा ॥

सत्तनाम लौ लावही, गहै संत की ओट ।
सतगुरु की परतीत कर, हंस जाय सतलोक ॥

॥ सोरठा ॥

सतगुरु बिन नहिं काज, जीव कहां होइ बाचई ।
काल तीन पुर राज, नाम बिना कैसे बचै ॥

॥ चौपाई १८ ॥

टूटि जाय यह मंदिर कांचा । तौ यह जीव कहां होइ बाचा ॥
सब्द से परिचै नाहीं करई । कैसे जिव भवसागर तरई ॥
बहुतक मंदिर खोज जो कीन्हा। येही सब्द साध नहिं चीन्हा ॥
सब्द बिदेह न कोई बिबेकी । रूप बरन को सब कोई देखी ॥
ताहि सार को आप जो करई। तब सतलोक पयाना धरई ॥

जिन नहिं तन मन सब्द समोई । तिन सब जनम अकारथ खोई ॥
सब्द रतन की दृष्टि जो होई । तब अदृष्ट को देखै सोई ॥

॥ दोहा ॥

सब्द सार जानै जोई, जिव बिरले तरि जाय ।
काया माया थित नहीं, सब्द लेव अर्थाय ॥

॥ सोरठा ॥

सब्द काया में सार, और सकल बेसार है ।
ज्ञानी करो बिचार, सतगुरु ही से पाइये ॥

॥ चौपाई १६ ॥

नहिं आसा यह जिवरा केरी । पावै नाम तो काटै बेरी ॥
जो कोई जीव मुक्ति को चाहै । सो अज्ञा सतगुरु निबाहै ॥
सुर नर भरमि मुए जग माहीं । जप तप गर्व न नाम समाई ॥
ऐसेहि भरम मुआ जग सारा । काहु न सतगुरु मर्म बिचारा ॥
ज्ञानी बहुत देव आराधे । कर्म करे और इन्द्री साधे ॥
दीन्हो फंदा जम ही ऐसे । स्रोहि भवसागर छूटै कैसे ॥
मतको इभटक मरोएहि बाटा । घरनि अकास माहिं जेहि घाटा ॥

॥ दोहा ॥

कर्म फंद जिव फंदिया, जप तप पूजा दान ।
जेहि बस्तू जिव काज होय, सो नहिं परी पिछान ॥

॥ सोरठा ॥

तरै जो नाम समाय, बिना थीर जिव बूड़िया ।
सब्दहि कहा दृढ़ाय, सतगुरु के सतभाव से ॥

॥ चौपाई २० ॥

तत्व सार जाने नर कोई । किरतम में जग गया बिगोई
निसदिन सतगुरु सब्द पुकारै । पंडित सतगुरु नाहिं बिचारै
झूठ धोख सबहिन पतियाई । सत्त सब्द हिरदे न समाई

॥ सोरठा ॥

सब्द गहो गुरु ज्ञान, मूल ध्यान सतगुरु कहै ॥
सोई संत सुजान, शब्द बिबेकी होय जो ॥

॥ चैापाई २४ ॥

जिव निस्तार निज नाम से होई। बिना नाम बाचै नहिं कोई॥
सुरनरमुनिषट कर्म भुलाना। होइनिःकर्म नहिं नाम समाना॥
फिर फिर कर्म बंधन सब होई। नाम बिना नहिं बाचै कोई॥
ऐसे बहुते भये उदासो। नाम बिना न छुटे चौरासो॥
नाम बिना जिव जम ले जाई। नाम बिना नहिं कर्म कटाई॥
नाम बिना बहु देह धराई। जोनी संकट फिर फिर आई॥
सबहि पचेधन धामहि लागी। बिरला भया नामअनुरागी॥

॥ दोहा ॥

कोई न जम से बंचिया, बिना नाम घर खाय।
जे जन बिरले नाम के, ता को देख डेराय॥

॥ सोरठा ॥

तब मिटै करम को अंक, सत्त नाम को पाइहैं।
जीव होय निःसंक, सत्त बचन सतगुरु कहैं॥

॥ चैापाई २५ ॥

प्रानी नाम का पावै बीरा। होय हंस तजि काग सरीरा॥
तब हो मिटै करम को अंका। जो सत नाम गहे निःसंका॥
जीव प्रतीत करै परवाना। नाहीं तो होइ नरक निदाना॥
सतगुरु मिलै दयानिधि पावै। निज घर जाय बहुरि नहिं आवै॥
जेहि देखि जम करै सलामा। निज परवाना मुहर सतनामा॥
घाट बाट जम रोकै नाहीं। मुहर देखि सिक्काजोआहीं*॥
बिन परवाना नहिं निसतारा। जो पावै सो उतरै पारा॥

---

*डरते हैं।

॥ दोहा ॥

नर नारी और बालका, सबही को परवान ।
निज सतलोकहि जाइहैं, बोले संत सुजान ॥

॥ सोरठा ॥

जहां छांह नहिं धूप, तहां जो सब्द सरूपहै ।
देखै बिमल सरूप, जनम सुफल करि मानई ॥

॥ चौपाई २६ ॥

पार उतरना जो कोई चाहै । सो खेवट से प्रीत निबाहै ॥
भवसागर भव संकट होई । पार सार नहिं बूझै कोई ॥
सूझै जो नहिं अगम पसारा । होय पार खेवट करे सारा ॥
खेवट महिमा जाने कोई । तीन लोक खेवट को होई ॥
पारब्रह्म जो कहिये ऐसा । जाके आगे सतगुरु देसा ॥
जम को जहां नहीं परबेसा । आदि पुरुष के जहवां देसा ॥
जहं सोइ जाय और सो होई । जरा मरन से बाचे सोई ॥
तीन लोक को वेद बखाने । चौथे उनमुन भेद न जाने ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु निज सत भाव से, ऐसा भेद बताय ।
धन्य सिष्य कर लाय नेह, जो अस छापा पाय ॥

॥ सोरठा ॥

बिन बैराग निस्तार, कहो कैसे भौजल तरै ।
ता को करहु बिचार, सतगुरु मिलै तो पाइये ॥

॥ चौपाई २७ ॥

फंदा जम का कैसे कटे । निसि बासर जो नाम न रटे ॥
यह घाटी है जम की फांसी । सुर नर मुनि फंदे चौरासी ॥
तीन लोक जम जाल पसारा । ता में उरझि रहा संसारा ॥
जनम जनम है जम को त्रासा । मृत्यु लोक पाताल अकासा ॥

सत्त सब्द परतीत न कोई। ऐसे सब जग गया बिगोई॥
चौथे लोक का तब सुख पावै। जब सतगुरु सतसब्द बतावै॥
मन बच कर्म जो नामहि लागै। जनम मरन छूटै भ्रम भागै॥

॥ दोहा ॥

कर्म करै देही धरै, फेर फेर पछिताय।
बिना नाम बंचै नहीं, जीवहि जम लै जाय॥

॥ सोरठा ॥

गाढ़ो जम को फंद, जेहि फंदे जिव फंदिया।
कटै तो होय अनंद, सार नाम सतगुरु दिया॥

॥ चौपाई २८ ॥

बानी जो गहिरानी बोलै। गहिरा होय सो उनमुनि खोलै।
इंगला पिंगला पै अंतस रहै। सुषमना तंतु जान के गहै॥
जब लग कीट गति नहिं बिसरावै। तब लग कस भृङ्गी कहलावै॥
त्रिकुटी मध्य सुरति संचरै। उनमुनि मद्धे पांवहि धरै॥
कूंची कर गहि खोल किवारा। अनहद नाद सून्य झनकारा॥
सुनै जो गुरुमुख देखै नैना। तब पतियावै गुरु के बैना॥
धुन के सुने आतमा जागै। अनुभै तारी सहजै लागै॥

॥ दोहा ॥

अगम अगोचर पैठि के, देखै तत्व बिलोइ।
बानी जहँ निरबन है, समरथ सांचा सोइ॥

॥ सोरठा ॥

जग में बहु परपंच, तामें जिव भूला सबै।
नहिं पावै कोइ संच, एक नाम जाने बिना॥

॥ चौपाई २९ ॥

भौजल तबही उतरै पारा। जबहि मिलै सतगुरु कनिहारा॥
बिन कनिहार न भौजल तरही। डूबहि फिर फिर देही धरही॥

जो कोइ खोज लीन्ह कनिहारा। नाम जहाज चढ़ि उतरै पारा॥
गुरु प्रताप से भौजल छांड़ै। धुजा सुरति की सुन में गाड़ै॥
अनहद के नीसान बजावै। हंसराज होइ संत कहावै॥
सतगुरु मिलै सतनाम समावै। भौजल तजि सतलोक हि आवै॥
भौजल का बिसरै सब साज। सुख सागर बिलसै सुख राज॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु को बिस्वास कर, तजै लोक कुल लाज।
भौजल पार सो होइ जिव, चढ़ सत नाम जहाज॥

॥ सोरठा ॥

भौजल अगम अपार, अति अथाह अंबुज अहै।
डूब सकल संसार, बिन परचे कनिहार सब॥

॥ चौपाई १० ॥

मन में किरति जो ऐसी होई। धरती रहै गगन में जोई॥
जेहि खोजत सुर नर मुनि थाके। जाको खेल न जाने बाके॥
ऐसे भये दसो औतारा। और बहु भांति भया संसारा॥
पल में दसा अनेकन होई। नहिं कितहूं थिर गये समोई॥
जाको अहै सकल बिसतारा। नहिं कोइ ता का रूप निहारा॥
पांच तत्त दस इन्द्री संगा। उपजे बिनसे नाना रंगा॥
तेहि धोखे जग रहा भुलाई। जब चीन्हे तब धोखा जाई॥

॥ दोहा ॥

पाछे जन्महि को गहै, कागद को उच्चार।
उलटा है सूधा करै, तब दीखै संसार॥

॥ सोरठा ॥

निज मन सतगुरु पास, जहां जाय सब सिधि मिलै।
जग ते होय उदास, तो को कोइ नहिं खोजिया॥

॥सोरठा॥

सत्त सब्द परमान, अनहद बानी जो दृढ़े।
और झूठ सब ज्ञान, सत्त सब्द सत सार है ॥

॥ चैापाई २१ ॥

सत्त नाम आहै सत सारा, अगम निगम का कुंजी तारा ।
ररंकार सब्द इक होई । ता में राखो सुरति समोई।
मूल नाम का करो बिबेका । ज्ञान चक्षु ते बिरले देखा ॥
जाकर कुंजी तारा होई । घट का भेद लखेगा सोई ।
सतगुरु मिलैं तो भेद बतावें । भौजल माहिं बहुर नहिं आवे।
सुनै जो ऐसा अगम संदेसा । निहचै छूटै जम का देसा ।
चेला गुरु परतीत जो धरई । जम तेहि देख डंडवत करई ॥

॥ दोहा ॥

यह सतगुरु उपदेस है, जो मानै परतीत ।
करम भरम सब त्यागि के, चलै सो भौजल जीत ॥

॥ सोरठा॥

गहै सब्द को मूल, बुंद सिंध में मिलि रहै।
सब्द माहिं अस्थूल, बीज बृच्छ बिस्तार भो ॥

॥ चैापाई २२ ॥

लख सोई अलक्ख जो होई । सब्द सुरत सम राख समोई ॥
सब्द सनेही राखै चीन्हा । निस दिन रहै सब्द में लीना ॥
निर्गुन सर्गुन तासु पसारा । आप आपना रूप निहारा ॥
तेहि सब दृष्टि रहै अनुरागी । आस्रम माहिं होय बैरागी॥
ऐसी सुरति रहै लौ लाई । निद्रा भूख सहज ही जाई ।
पारब्रह्म की महिमा भाखै । विषय तजै अमृत रस चाखैं ॥
मन थक ब्रह्म होय जो वाके। देखै सुन्य मार्ग फिर ताके ॥

॥ दोहा ॥

पृथ्वी अप और तेज नहिं, नहीं वायु आकास।
अललपच्छ तहं होइ रहो, सत्त सब्द बिस्वास॥

॥ चौपाई ३३ ॥

सो तहं हंस रावरा* होई। मानसरोवर पहुंचै सोई॥
काया पलट होय आवनी। तब पावै सतगुर की सैना॥
देह दसा बिसरै जेहि केरी। काटै करम भरम की बेरी॥
फिर देही नाहीं धर लेही। सुख बासा सुख सागर रहही॥
हंसन के संग करै जहीरा। पांच तत्त को रहै सरीरा॥
बिमल होय हंसा की देही। सदा रहै जो सब्द सनेही॥
मिटै बिदेश की आसा जबही। पहुंचै जाय देस में तबही॥

॥ दोहा ॥

हंस होय सतजीव जो, करै देस की आस।
जिन प्रतीत है शब्द की, करिहै सो सुख बास॥

॥ सोरठा ॥

महिमा अगम अपार, ताहि अगोचर जानिये।
सोई है तत सार, जो सतगुरू दया करैं॥

॥ चौपाई ३४ ॥

ओंकार को सब जग जानी। ता ते पंडित बेद बखानी॥
निराकार ते भया अकारा। या बिधि भौसागर बिस्तारा॥
सूछम से जो भया अस्थूला। हिलमिल बिलसै ता को मूला॥
सूछम कोर जाहि निरमाया। आपहि सब का मूल कहाया॥
ता मद्धे निःतत का बासा। बिमल सरूप सदा परकासा॥
तीन लोक में रहा समोई। चौथे को जब पावै कोई॥
पांच तत्त गुन तीन जो राचा। देह लागि सुर नर मुनि नाचा॥

---

* हजूरी।

॥ दोहा ॥

तिरबिधि ताप को काटही। चौथे आप कहाय।
सत्त सब्द जाने बिना, सब जग रहा भुलाय॥

॥ सोरठा ॥

मूल छांड़ि गह डार, सुर नर मुनि जो रहे सब।
भूल रहा संसार, तिरबिधि रूप पखंड में॥

॥ चौपाई ३५ ॥

बिले नाम कोई कोइ ध्यावे। जेहि ते आवागवन नसावे॥
ममता ते जग को बिस्तारा। नाम गहे सो उतरे पारा॥
काहे पंडित विद्या पढ़ई। सतगुरु के सतपंथ न चलई॥
बेद कतेब धरे इक ओरा। तन मन अर्पे नाम निहोरा॥
पटतर नाम न जग कछु अहई। भिङ्गी जीव जो नाम छुँटैई॥
नाम बिना जिव परलै होई। सुर नर मुनि सब गये बिगोई॥
नाम एक सार जग माहीं। नाम बिहूना आवै जाही॥

॥ दोहा ॥

नाम भजे धन धाम तजि, नर नारी सब कोय॥
अवचल महिमा जेहि बसै, तो अवचल देही होय॥

॥ सोरठा ॥

सत्तनाम बिस्वास, करम भरम जग परिहरै।
सतगुरु पुरवै आस, जो नर आस ऐसी करै॥

॥ चौपाई ३६ ॥

मूलहि कोइ न लागे आई। फेर फेर जग परलै जाई॥
देह धरे बहु कर्म कमाई। कैसे आवन गवन नसाई॥
तीरथ बरत नेम आचारा। येही में भूला संसारा॥
पूजि पषान नहिं आतम जाना। तन छूटे पाषान समाना॥
मंत्र जंत्र सीखे ओछाई। नाटक चेटक सक्ति दिखाई॥

बाजी में संसार भुलाना । सतगुरु मिले न नाम समाना ॥

॥ दोहा ॥

बिबिध रूप की भक्ति में, फिरि फिरि घरे सरीर ।
एक नाम बिन मुक्ति नहिं, ऐसो कहैं कबीर ॥

॥ सोरठा ॥

परलय जनम अनेक, करम करै सुख दुख सहै ।
नहिं पावै कोइ एक, जेहि मिले जिव काज होय ॥

॥ चौपाई २७ ॥

सत्तनाम इक अच्छर सोहै । जाके बूझे जिव निर्मोहै ।
अच्छर में निःअच्छर होई । ज्ञानी होय सो बूझै कोई ॥
पंडित अच्छर बेद बखाने । निःअच्छर का मरम न जानै ॥
निःअच्छर है नाम की डोरी । जेहि मिले जिव फंदा तोरी ॥
बिन रसना गुन गावै कोई । सुरत सब्द घर जानै सोई ॥
कथा होय तो कहूं सुनाई । अकथ कथा कस जाय बताई ॥
ज्ञानी होय सो ज्ञान बिबेकी । अच्छर भेदी निःअच्छर देखी ॥

॥ दोहा ॥

कहत बिकल सब कोय, मूल मरम ना पावई ।
अकथ कथा सतगुरु कही, सुखी सुन जो चावई ॥

॥ सोरठा ॥

अथाह अमूल जो बेद, पार लोक बिस्तार जेहि ।
सतगुरु कहैं सो भेद, बीज वस्तु पहिचानई ॥

॥ चौपाई २८ ॥

सहज रूप धुन होत सदाई । सत्त सुक्रित को आसन जहंई ॥
अगम चढ़े जो चीन्हे कोई । धरती सुरति सो गगन समोई ॥
तारी दसवें द्वारे लागी । गुरु प्रताप से आतम जागी ॥
तनमनकीगतिमतिबिसरावै । सरतवंत कोइ सहज समावै ॥
धरतीतजि जब चढ़ैअकासा । देखै झिलमिल बिमल तमासा ॥
उर्ध रूप जाय निज अहई । गगन केमध्य मगन होइ रहई ॥

बज्र किवाड़ी लेहि उघारी । थाकेमन जब बाज* बिचारी

॥ दोहा ॥

सहज सुन्न के आगे, तीन लोक के पार ।
जहां निसान बजावही, सब्दन की झनकार ॥

॥ सोरठा ॥

सुनै जो अगम संदेस, निगम थके गुन गाय के ।
छूटे सब भ्रम भेष, निहचै जाय प्रमान कर ॥

॥ चौपाई ३६ ॥

अच्छर है निजसारअरूपा । जा ते सब जग धरा सरूपा ॥
लौ लावै छिन नहिं बिसरावै। आदि अंत की मद्धे पावै ॥
मूलमंत्रयहसतगुरु बोला । कुंजी कुफल ते कुंडी खोला ॥
मूल अहै जो सब मेंधरिआ । अनहद बानी अनुभव कहिया॥
मूल सब्द जो बोले बानी । आदि अंत की मध सहदानी ॥
मूल मंत्र सोई लख पावै । जाको सतगुरु सुरति लगावै ॥
सुरतिसनेही सभीबिचारा। सतगुरु ऊपर चढ़े पुकारा ॥

॥ दोहा ॥

सुरति सनेही है कोई, करै बिबेक बिचार ।
चीने चुने पपील ज्यों, चीनी रेत मंझार ॥

॥ सोरठा ॥

मूल मंत्र सब माहिं, बानी से उजियार भव ।
तहां धूप नहिं छांह, निगम जो नेत पुकारही ॥

॥ चौपाई ४० ॥

यही जगत है जम को देसा । नामभजै तब मिटै कलेसा ॥
जग को द्वार लेय परवाना । सतगुरु सहज अमी रस आना
जातेबिष नहिं ब्यापिसरीरा । अमृत पियै तजै विष नीरा ॥
जग मेंकाल जो जालपसारा । तीरथबरतकोकरि बिस्तारा॥

---

* छोड़े ।

कोई न सत्त नाम बिन बाचे। नेम अचार काम में राचे ॥
सबही उरझे भूत परेता। बिन चेते जग हुआ अचेता ॥
सकल देह जोनि लिपटाई। कैसे मन का धोखा जाई ॥

॥ दोहा ॥

सत्तनाम निर्आस पद, सत्तलोक को जाय।
झूठ आस संसार की, जेहि लागो जिव धाय ॥

॥ सोरठा ॥

करम काल बस जीव, भर्मे जो जिम पचि मरे।
नाम अमी रस पीव, काहे को बिष सींचही ॥

॥ चौपाई ४१ ॥

उनमुन ते जो सब रस चाखा। मन पवना जो अंतर राखा ॥
काया में पाताल अकासा। निःअच्छर मजहर है देसा ॥
आपा मेटि के तारी लावै। चंद्र स्थान में सूर उगावै ॥
अंध कूप दामिनि परकासे। अगम पंथ जेहि कीन्ह गुफा से॥
पांजी द्वार अजर जहं झांका। वहं होइ बाट चले सो ताका ॥
गगन मंडल में आसन मांड़े। उलट चोर कोतवाले डांड़े ॥
मंडप चहुं दिस एकहि बेरा। मिटि गई भौजल जीवन केरा

॥ दोहा ॥

रैन दिवस इक सम करै, तिमिर न होय प्रकास।
आदि ब्रह्म ते दीखई, पूजै मन की आस ॥

॥ सोरठा ॥

सतगुरु के परसाद, सहज समाध लगाइये।
रीझि रहा मन नाद, देख भेद सब जानिये ॥

॥ चौपाई ४२॥

एकहि है जग ब्रह्म निनारा। निज घट घट का खेल पसारा॥
सब्द एक और एकहि रूपा। सेत से उपजा लाल सरूपा ॥

एक देख तब मन पतियाई । एकहि में मन रहा समाई ॥
एकहि से जग भया अनंता । सतगुरु भेद बतावें संता ॥
वही वहां लै घर पहुंचावैं । जग अनंत में एक कहावैं ॥
एकहि टेक करै जिव आसा । मन बच क्रम सतगुरु बिस्वासा॥

॥ दोहा ॥

एक रूप इक बर्न है, एकहि है सब भेष ।
दुबिधा भरम बिसारिये, ऐसा अगम संदेस ॥

॥ सोरठा ॥

सत्तनाम है एक, जो सतगुरु सत भाखिया।
करहु एक की टेक, मुक्ति नहीं परतीत बिनु॥

॥ चौपाई ४३ ॥

वा का ज्ञान अखरावति सारा। बावन अच्छर का बिस्तारा ॥
नौ उपदेस भेद अस भाखा । नेति नेति से ऊपर राखा ॥
इक इक अच्छर की सहदानी । बेद का मूल कथा कहो बानी॥
सत्त लोक का अगम संदेसा । सो सतगुरु जीवन उपदेसा ॥
अकथ कथा अखरावति भाखी । बेद कतेब देहिं सब साखी ॥
अखरावति पढ़ि भेद बखाने । सतगुरु की महिमा सो जाने॥
आदि अंत निज अच्छर बूझै । अच्छर माहिं नि अच्छर सूझै ॥

॥ दोहा ॥

बिन अच्छर सब झूठ है, अच्छर सब में सार ।
अच्छर भेद जो पावई, सोई हंस हमार ॥

॥ सोरठा ॥

कहै कबीर उर माहिं, सत्तलोक परतीत कर।
हंसराज की छाहिं, सो निहचै भौजल तरै ॥

॥ दोहा ॥

सीस गुरू को अरपि के, कीजै तत्व बिचार ।
सतगुरु दया से मुक्ति फल, उतरै भौजल पार ॥

बेलवेडियर प्रेस, कटरा, प्रयाग की पुस्तकें

संतबानी पुस्तकमाला

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

कबीर साहिब की साखी संग्रह		...	१=)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	...	...	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली दूसरा भाग		...	॥।)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	...	...	।≈)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग		...	≈)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और भूलने		...	।=)
कबीर साहिब की अखरावती	...	...	≈)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	...	...	॥-)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १		...	१=)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित		...	१=)
तुलसी साहब का रत्नसागर	...	...	१।-)
तुलसी साहब का घट रामायण पहला भाग	...	...	१॥)
तुलसी साहब का घट रामायण दूसरा भाग	...	...	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली सटिप्पण पहला भाग		...	१॥)
गुरु नानक की प्राण-संगली दूसरा भाग	...	...	१॥)
दादू दयाल की बानी, भाग १ "साखी"	...	...	१॥)
दादू दयाल की बानी, भाग २ शब्द"	...	...	१।)
सुन्दर बिलास	...	...	१-)
पलटू साहिब भाग१—कुंडलियाँ	...	...	॥।)
पलटू साहिब भाग २—रेख़ते, भूलने, अरिल, कवित्त सवैया		...	।॥)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	...	...	॥।)
जगजीवन साहिब की बानी, पहला भाग	...	...	॥।-)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	...	...	॥।-)
दूलन दास जी की बानी,	...	...	।)॥
चरनदास जी की बानी, पहला भाग	...	...	॥।-)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	...	...	॥।-)

गरीबदास जी की बानी	...	...	१।-)
रैदास जी की बानी	...	...	॥)
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर	...	...	=)॥
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी	...	...	।-)
दरिया साहिब (माड़वाड़ वाले) की बानी	...	...	।=)
भीखा साहिब की शब्दावली	...	...	॥=)॥
गुलाल साहिब की बानी	...	...	॥।=)
बाबा मलूकदास जी की बानी	...	...	।)॥
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	...	...	-)
यारी साहिब की रत्नावली	...	...	=)
बुल्ला साहिब का शब्दसार	...	...	।)
केशवदास जी की अमीघूँट	...	...	-)॥
धरनी दास जी की बानी	...	...	।=)
मीरा बाई की शब्दावली	...	...	॥)
सहजोबाई का सहज-प्रकाश	...	...	।=)॥
दया बाई की बानी	...	...	।)
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी]	...	...	१॥)

[प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित]

संतबानी संग्रह, भाग २ [शब्द]	...	...	१।

[ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं]

कुल

अहिल्या बाई	...	...	=)

दाम में डाक महसूल व रजिस्टरी शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा—

मिलने का पता—

मैनेजर,

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

हिन्दीसाहित्य सुमन—छोटे लड़कों के लिए यह पुस्तक अपूर्व है (सचित्र) मूल्य ॥)

हिन्दी साहित्य सागर—कक्षा ३ व ४ के लिये (सचित्र) मूल्य ।-)॥

सावित्री और गायत्री—पं० चन्द्रशेखर शास्त्री की लिखी है। लेखक के नाम ही से इस उपन्यास की उपयोगिता प्रगट हो रही है। मूल्य॥)

सचित्र रामचरितमानस—यह असली रामायण बड़े रूप में टीका सहित है। भाषा बड़ी सरल और लालित्य पूर्ण है। यह रामायण २० सुन्दर चित्रों, मानस पिंगल और गोसाईं जी की जीवनी सहित है। पृष्ठ संख्या १४५०, मूल्य लागत मात्र केवल ८)। इसी असली रामायण का एक सस्ता संस्करण भी हम ने जनता के लाभ के लिए छापा है सचित्र और सजिल्द १२०० पृष्ठों का मूल्य ४॥)। प्रत्येक कांड अलग अलग भी मिल सकते हैं।

प्रेम तपस्या—एक सामाजिक उपन्यास—(प्रेम का सच्चा उदाहरण) मूल्य ॥)

लोक परलोक हितकारी—इसमें कुल महात्माओं के उत्तम उपदेशों का संग्रह किया गया है। पढ़िये और अनमोल जीवन को सुधारिये। मूल्य ॥।=)

विनय कोश—विनयपत्रिका के सम्पूर्ण शब्दों का अकारादि क्रम से संग्रह करके विस्तार से अर्थ है। मूल्य २)

हनुमान बाहुक—प्रति दिन पाठ करने योग्य, मोटे अक्षरों में बहुत शुद्ध छपा है। मूल्य ~)॥

तुलसी ग्रन्थावली—रामायण के अतिरिक्त तुलसीदास जी के कुल ग्यारहों ग्रन्थ शुद्धता पूर्वक मोटे अक्षरों में छपे हैं और पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं। मूल्य ४)

कवित्त रामायण—पं० रामगुलाम जी द्विवेदी कृत पाद टिप्पणी में कठिन शब्दों के अर्थ सहित छपी है। मूल्य ।=)

नरेन्द्र-भूषण—एक सचित्र सजिल्द उत्तम मौलिक जासूसी उपन्यास है। मूल्य १)

संदेह—यह मौलिक क्रांतिकारी उपन्यास अनूठा और बिलकुल नया है। दाम ॥)

राज संस्करण १॥)

चित्र माला—अति सुन्दर मनोहर १२ रंगीन चित्रों का संग्रह है। मूल्य ।॥)

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।